ॐ

ओंकार कवच

सं० २०३५ वि० गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर ''ओंकार चालीसा'' नामक पुस्तिका प्रकाशित हुई। इसकी सूचना, जनपद नैनीताल निवासी मेरे प्रथम शिष्य प्रिय श्री मोहन सिंह कानवाल प्रवक्ता को मिली। उन्होंने अपने दिनांक १०.०८.७८ के पत्र में, इन पंक्तियों को भी लिख भेजा - ''ओंकार चालीसा'' के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर अत्यन्त हर्ष हुआ। गुरुदेव ! यदि इसी प्रकार ''ओंकार कवच'' कीलक जैसे स्तोत्रों की रचना भी श्री महाराज जी के कर कमलों से हो जाती तो बहुत ही हर्ष-प्रसन्नता की बात होती। बाकी मैं दीन और अति अल्पबुद्धि का, क्या कह ही सकता हूँ ?'' बस, मेरे शिष्य के इसी उपयोगी सुझाव ने मुझे इस ''ओंकार कवच'' को लिखने की प्रेरणा प्रदान की। साधारण जन के लिए उपयोगी बनाने हेतु इसे हिन्दी भाषा में ही लिखना उचित समझा।

ओम् शब्द का अर्थ तो 'रक्षक' होता है। अतः इस अमोघ वैदिक कवच को अपनाने वाले सभी नर-नारी भगवान् ओंकारेश्वर के द्वारा, हर प्रकार की रक्षा प्राप्त करेंगे, इसमें शंका नहीं।

ओंकार आश्रम, गोरखपुर — स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती

ॐ

ओंकार कवच

नमो नमो 'अश्मवर्म' ओंकारा। शैलकवच प्रभु एक हमारा ॥१॥
नमो नमो छः दिक् के धाता। ओम् कवच है प्राण प्रदाता ॥२॥
पूर्व दिक् महं चाहे जो नाशा। अग्नि सूर्यबाण करे विनाशा ॥३॥
दक्षिण दिक् जो शत्रु लयकारी। इन्द्र का पितरवाण संहारी ॥४॥
पश्चिम दिक् जो काल सतावे। अन्नवाण से वरूण बचावे ॥५॥
उत्तर दिक् जब रिपु डेरावे। सोम का अश्निवाण बचावे ॥६॥
नीचे दिक् नाश जेहि चाहे। विष्णु औषधवाण से थाहे ॥७॥
ऊपर दिक् जब तापी होवे। वर्षाबाण बृहस्पति का धोबे ॥८॥
ओम् दिक् रक्षक सबका स्वामी। सब दिक्पाल ओम् अनुगामी ॥९॥

देवी-देवता अरू अवतारा। सबका ओम् ही मूल अधारा ॥१०॥
देवकाज लीला जग माँहीं। ओम् विभूति अरू कछु नाहीं ॥११॥
राम रूप में रावण मारा। कृष्ण रूप में कंस संहारा ॥१२॥
ओम-शक्ति नरसिंह बनाई। दैत मार प्रहलाद बचाई ॥१३॥
कालि रूप में असुरन मारा। पापी जन को अम्ब संहारा ॥१४॥
जब-जब अघ भार महि अकुलानी। राखे धर्म शिव ओम् भवानी ॥१५॥
ओम् पिता अरू ओम् ही माता। ओम् सखा अरू ओम् ही भ्राता ॥१६॥
ओम् ही गुरू परम हितकारी। अज्ञान कलेश विनाशन हारी ॥१७॥
पंच तत्व से राखन हारा॥ प्रेत उपद्रव नाशन हारा ॥१८॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा। रहे न ओम्-कवच प्रतापा ॥१९॥
सब काल सब देश रखवारा। अनन्त अमोघ सुकवच हमारा ॥२०॥
ओम् कवच अद्भुत जग माँही। वेद-कवच अस दूसर नाहीं ॥२१॥
त्याग ओम् जो अन्य को जावे। अमृत छोड़ जस विष को धावे ॥२२॥
कहँ लग करों कवच गुणगाना। वेद पुराण न सके बखाना ॥२३॥
मानो मोर परमहित बानी। गहो कवच निज संकट जनी ॥२४॥
ओंकारानन्द का रखवारा। ओम् कवच प्राणों से प्यारा ॥२५॥
नमो नमो अश्यवर्म ओंकारा। शैल कवच प्रभू एक हमारा ॥